साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ९: २०१२-१३

'वा छवि को रसखान विलोकत'
परिचर्चा एवं पद गायन
पृष्ठ - 26

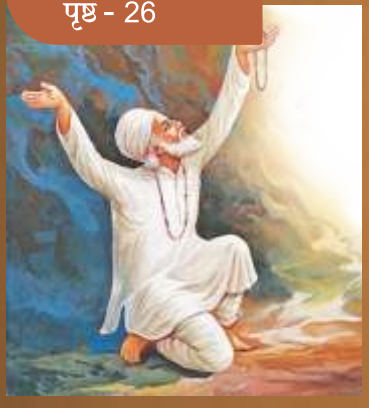

कविता का मापदंड ताली नहीं
- केदारनाथ सिंह
पृष्ठ - 20

भागवत् मंच से किए जा रहे हिन्दी प्रसार को प्रणाम
पृष्ठ - 8

न्यूजीलेंड में रुदाली का मंचन ..... पृष्ठ - 34

'आज हैं हम सिर्फ वोटर, आदमी कोई नहीं' ..... पृष्ठ - 5

बन जाओ देवी दुर्गा ..... पृष्ठ - 40

अशिक्षित भी हो सकता है चरित्रवान ..... पृष्ठ - 10

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबाद: शशिकांत पाण्डेय, मुकेश मणिकांचन
शब्दम् , हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141 . फोन: (05676)234501/503
ई–मेल : shabdam.ceo@gmail.com, pmhoskb@gmail.com
वेबसाइट– www.shabdamhindi.com ब्लॉग– www.shabdamsamachar.blogspot.in
मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई फोन - 022-22826187

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ९: २०१२-१३

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

(कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ.ओमप्रकाश सिंह

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंजर उल वासै

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित
शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 3

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

छठां ग्रामीण कवि सम्मेलन 5
हिन्दी सेवी सम्मान 8
शिक्षक दिवस 10
हिन्दी संस्कृति सप्ताह 13
गांधी जयंती 18
स्थापना दिवस 20

सांस्कृतिक–कार्यक्रम

भरतनाट्यम एवं कुचिपुड़ि नृत्य 23
संतूरवादन–पंडित सतीश व्यास की प्रस्तुति 25
रसखान स्मृति समारोह 26
रूदाली 34

सतत स्थायी कार्यक्रम

शब्दम् बालिका पाठशाला 36
सिलाई केंद्र 38
प्रश्नमंच 39

विविधा

बहनबचाओ (रक्षाबंधन एवं नवदुर्गा) 40
दीपावली 43
सम्मतियां / पत्र 43

अध्यक्षीय निवेदन

सत्रह नवंबर 2013 को नवम् वर्षगांठ मनाने के साथ ही शब्दम् ने दसवें वर्ष में कदम रख लिया है। इसके साथ ही मेरे अंतस में हर्ष और उत्साह जागृत होने लगा है। बीते समय में किया गया निवेश, संघर्ष ही आने वाले दिनों की पटकथा लिखता है। मेरा विश्वास है, इसी तरह शब्दम् के विगत नौ वर्ष की उपलब्धियां आने वाले दिनों की सफलता को उसके शिखर पर ले जाएंगी।

आयोजन और गतिविधियों की दृष्टि से वर्ष 2013–14 पर्याप्त रूप से संतृप्त रहा। इस वर्ष शब्दम् की अहम् उपलब्धियां ब्रज की पावन भूमि से अर्जित हुईं। एक विशिष्ट अवसर वृंदावन में 'हिन्दी सेवी सम्मान' समारोह के रूप में मिला। भागवत भास्कर पंडित श्रीकृष्णचंद्र शास्त्री 'ठाकुरजी' को हिन्दीसेवी के रूप में भागवत–मंच पर सम्मानित कर हमने स्वयं को धन्य किया।

मथुरा में 'वा छवि को रसखान विलोकत' समारोह का आयोजन महान कवि रसखान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर

पहला भव्य और महत्वपूर्ण प्रयास माना गया, जिसने ब्रजमंडल की अनेक विभूतियों के मध्य शब्दम् के कृतित्व की छाप छोड़ी। नवम् स्थापना दिवस पर शब्दम् ने समकालीन हिन्दी कविता के शीर्षस्थ कवि प्रो. केदारनाथ सिंह को सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित किया।

संस्कृति प्रोत्साहन के रूप में शिक्षक दिवस, हिन्दी सप्ताह एवं गांधी जयंती आयोजन अलग–अलग स्थानों पर हुए। 'गांधी को जानो' श्रृंखला में रिचर्ड एटनबरो की हिन्दी रूपांतरित फिल्म के

प्रदर्शन ने नई पीढ़ी को गांधी जी के बारे में एक बार पुनः संदेश दिया। प्रश्नमंच और निबंध प्रतियोगिता ने उनके गांधी विषयक ज्ञान में वृद्धि की।

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीण कवि सम्मेलन एवं हिन्दी छात्र प्रोत्साहन पुरस्कार का प्रयास भी सराहनीय रहा। चरित्र निर्माण की श्रृंखला में रक्षाबंधन और दीपावली पर 'बहन–बेटी बचाओ' एवं 'हर बेटी दुर्गा है' विषय पर कार्यशाला और जागरूकता के आयोजन किए गए।

प्रायोजित कार्यक्रम आनंदा शंकर जयंत का शास्त्रीय नृत्य, पंडित सतीश व्यास का संतूर वादन, विशाल कबीर महोत्सव (मुंबई) एवं भारतीय संस्कृति समारोह (न्यूजीलैंड) अपने उच्चस्तरीय एवं गरिमापूर्ण प्रारूप के साथ संपन्न हुए।

सतत् (स्थाई) कार्यक्रमों के अंतर्गत बालिका पाठशाला (नगला भीमसेन) का संचालन उपयोगी सिद्ध हुआ। दूसरे स्थाई कार्यक्रम सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र ने बालिका स्वावलंबन को पूर्व की भांति प्रोत्साहित किया। हिन्दी और उसकी संस्कृति के प्रसार का रोचक कार्यक्रम 'प्रश्नमंच' व्यापक स्तर पर जारी रहा।

मुझे प्रसन्नता है कि संगीत–कला के शास्त्रीय स्वरूप की जीवंतता बनाए रखने की ठोस पहल कर रहे स्पिक मैके का लगातार उल्लेखनीय योगदान शब्दम् के साथ बना हुआ है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द ब्रज फाउंडेशन एवं प्रयास संस्था (न्यूजीलैंड) आदि संगठनों का सहयोग भी मिला। मैं इन सब का आभार प्रकट करती हूं। इनके अतिरिक्त हमारे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद।

वार्षिकी का नवम् अंक सौंपते हुए मैं आशा करती हूं कि आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं हमें अवश्य प्राप्त होंगी।

सादर–सस्नेह

हँसी के तार के होते हैं ये बहार के दिन
हृदय के हार के होते हैं ये बहार के दिन

–'निराला'

छठां ग्रामीण कविसम्मेलन

'आज हैं हम सिर्फ वोटर, आदमी कोई नहीं'

सुदूर गांव की गलियों तक कविता और साहित्य की सुगंध महकाने वाले शब्दम् के 'ग्रामीण कवि सम्मेलन' ने इस बार बनवारा गांव में 22 जून 2013 को काव्य रस की बरसात की। जिसमें आमंत्रित दूरदेहात के लोगों ने कविता के संस्कार को नज़दीक से जाना और विभिन्न प्रकार के रसों का आनंद लिया।

कवि सम्मेलन में ग्रामीण परिवेश के लिए उपयुक्त श्रेष्ठ कवियों को शब्दम् द्वारा आमंत्रित किया गया था। झांसी से आए कवि श्री रामनरेश रमन ने ओजस्वी कविताओं से युवाओं के मन में देश प्रेम की ज्वाला फूंकी। आगरा के श्री शिवसागर शर्मा ने गीतों की रसमय धारा में श्रोताओं को सिक्त किया। किशनी से आए श्री बलराम श्रीवास्तव एवं ग्वालियर से पधारीं श्रीमती नीलम नीरजा के अलावा धौलपुर के श्री गोविंद पटवारी ने अपने–अपने रस और विधा की रचनाएं प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोहित किया। हास्य की रचनाओं ने भी लोगों को खूब गुदगुदाया। शब्दम उपाध्यक्ष श्री नंदलाल पाठक द्वारा भेजी गई काव्य पंक्तियों का वाचन भी किया गया।

कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए कवि श्री शिवसागर शर्मा ।

श्रीमती किरण बजाज ने दूरभाष द्वारा संदेश देते हुए कहा, अब देश की किस्मत गांव के हाथ में है। भारतीय सभ्यता गांव से ही शुरू हुई है, इसलिए गांव को जागरूक होकर हिन्दी भाषा और संस्कृति को बचाना होगा। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह ने भी फोन से संबोधन दिया। उन्होंने गांव वालों के उत्साह की प्रशंसा की और अपनी कुछ रचनाएं भी सुनाईं।

अंत में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. ओ.पी. सिंह ने आभार प्रकट करते हुए आयोजन को प्रेरणादायी बताया।

कवि सम्मेलन में कविताओं का रसास्वादन करते हुए महिलाएं एवं पुरुष श्रोता ।

कवि सम्मेलन के उपरांत कवियों एवं शब्दम् पदाधिकारियों के साथ समूह में ग्राम आयोजन समिति के लोग।

कवियों द्वारा प्रस्तुत
कविताओं की कुछ पंक्तियां-

छिन्नभिन्न हो रही है सभ्यता हमारी अब,
हलके में बात यह लेनी नहीं चाहिए।
भले ही विकास खूब हुआ मानते हैं हम,
अनदेखी संस्कृति की होनी नहीं चाहिए।

-रामनरेश 'रमन'

गागर है भारी, पानी खींचने से हारी,
तू अकेली पनिहारी, बोल कौन ग्राम जाएगी।
मैंने कहा थककर चूर है तू, ला मैं
रसरी की करूं घरी कुछ विराम तो तू पायेगी।
बोली- जब खींच चुकी सोलह घट जीवन के,
आठ हाथ रसरी पै कैसे थक जाएगी।
मैंने कहा, रसरी की सौबत में पड़ चुकी तू,
जल चाहे जाएगी, पै ऐंठ नहीं जाएगी।

-शिवसागर शर्मा

राजनीतिक गंध ज्यादा है, हवा में घुट रहा दम
सिर्फ जिसमें नीति हो ऐसा हमें वातावरण दो।
दूरियां बढ़ गईं कथनी और करनी में हमारी
वाग्देवी शब्द को दो अर्थ, नूतन व्याकरण दो।
जेब जब भरने लगी तो आ गई मन में गरीबी,
लोभ इतना दिया तो संतोष का भी एक क्षण दो।
आज हैं हम सिर्फ वोटर, आदमी कोई नहीं है,
मूलधन है जिंदगी का जो, हमें वह आचरण दो।

-नंदलाल पाठक

हर जला दीप है आरती तो नहीं,
हर कोई पार्थ का सारथी तो नहीं।
राष्ट्र की अस्मिता जिसको प्यारी नहीं,
वह कोई और है भारती तो नहीं।

-बलरामश्रीवास्तव

बानवारा में शब्दम् ने आयोजित किया कवि सम्मेलन

कार्यक्रम

अनदेखी प्रकृति की अब होनी नहीं चाहिए...

समारोह
- उदय प्रताप ने फोन पर सुनाई कविता
- कविताएं सुनने के लिए ग्रामीण उमड़े

काव्य पाठ करती हुए कवयित्री नीरजा

कवि सम्मेलन का आनंद उठाते हुए श्रोतागण।

फोटो- व सी एक्सप्रेस

हिन्दी सेवी सम्मान :
भागवत् मंच से किए जा रहे हिन्दी प्रसार को प्रणाम

शब्दम् द्वारा हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य और संस्कृति के प्रसार हेतु महत्वपूर्ण कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्ति को हर वर्ष 'हिन्दी सेवी सम्मान' प्रदान किया जाता है। देश के नागरिक अपने मूल कार्य के साथ हिन्दी को समृद्ध एवं लोकप्रिय बनाने के लिए अपना योगदान दें, इस सम्मान के पीछे शब्दम् का यही उद्देश्य है।

इस वर्ष के 'हिन्दी सेवी सम्मान' के लिए भागवत भास्कर पंडित श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री 'ठाकुरजी' का चयन कर शब्दम् ने अपने उपरोक्त उद्देश्य की भलीभांति पूर्ति की। वस्तुतः श्री ठाकुरजी श्रीमद्भागवत, रामकथा एवं गीता को सरल, सरस, प्रभावी हिन्दी के माध्मय से प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने पिछले 38 वर्ष के दौरान निरंतर देश–विदेश में भारतीय संस्कृति का प्रसार किया है। उनकी लोकप्रियता अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच कर हिन्दी भाषा को गौरव प्रदान कर रही है।

ऐसे हिन्दीसेवी पंडित श्रीकृष्णचंद्र शास्त्री 'ठाकुरजी' को वृंदावन में 21 जुलाई को गरुपूर्णिमा के अवसर पर भागवत कथा के आयोजन में 'शब्दम् हिन्दी सेवी सम्मान' प्रदान किया गया। शब्दम् न्यासी श्री शेखर बजाज ने उन्हें सम्मान पत्र, अभिनंदन पत्र, अंगवस्त्र, श्रीफल एवं सम्मानराशि भेंट की।

पंडित श्रीकृष्णचंद्र शास्त्री 'ठाकुरजी' का सम्मान करते हुए श्री शेखर बजाज

आयोजन में श्रीमती किरण बजाज द्वारा भेजे गए संदेश के माध्यम से ठाकुरजी की हिन्दी सेवा पर प्रकाश डाला गया। श्रीमती बजाज ने लोगों से हिन्दी को अपनाने एवं उसका प्रचार–प्रसार करने का निवेदन भी किया।

'सरकार ध्यान दे तो अर्थव्यवस्था में सुधार संभव'

फोगला आश्रम में चल रही श्रीमद्भागवत कथा

जहां सनातन धर्म है वहीं भगवान

'आचार्य भगवान के साक्षात् स्वरूप'

उद्धव ब्रज गमन लीला का मार्मिक वर्णन

शब्दम् द्वारा पूर्व में दिए गए हिन्दी सेवी सम्मान :

शब्दम द्वारा पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी सेवी के रूप में जो लोग सम्मानित किए गए उनमें मुख्य हैं, मुक्तक रचयिता श्री लाखन सिंह भदौरिया, पूर्व सांसद एवं कवि श्री उदयप्रताप सिंह, मुंबई के साहित्यकार एवं ग़ज़लकार श्री नंदलाल पाठक, हिन्दी सेवी पद्मभूषण न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी, मराठी भाषी हिन्दी साहित्यकार डॉ चंद्रकांत बांदिवडेकर, पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक एवं प्रख्यात साहित्यकार आलोचक प्रो. नामवर सिंह।

सम्मान समारोह के समय उपस्थित श्रद्धालु श्रोतागण।

शिक्षक दिवस - विशिष्ट शिक्षक सम्मान

अशिक्षित भी हो सकता है चरित्रवान

शब्दम् द्वारा शिक्षक दिवस पर पांच श्रेष्ठ शिक्षकों को 'विशिष्ट शिक्षक सम्मान – 2013' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ''समकालीन परिवेश में शिक्षक द्वारा छात्र का चरित्र निर्माण'' विषय पर संगोष्ठी भी हुई, जिसमें मुख्यवक्ता प्राचार्य नरेंद्र प्रकाश जैन ने कहा कि चरित्र का संबंध सिर्फ स्कूली शिक्षा से नहीं है। एक अशिक्षित व्यक्ति चरित्रवान हो सकता है और एक शिक्षित व्यक्ति चरित्रहीन हो सकता है। चरित्र, स्कूल और किताबों से अधिक व्यवहार से सीखने वाला मूल्य है। बच्चों पर शिक्षक का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, इसलिए उसका चरित्रवान होना ज़रूरी है।

एस. आर. के. स्नातकोत्तर महाविद्यालय फीरोजाबाद के डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा ने कहा कि नेता और अभिनेता आज की युवा पीढ़ी के आदर्श हो गए हैं। परिवेश चाहे समकालीन हो या अतीतकालीन, शिक्षक यदि अपने शिष्यों का चरित्र निर्माण करना चाहता है, तो सबसे पहले उसे अनुकरणीय आदर्श चरित्र का स्वामी बनना होगा।

डॉ. महेश आलोक ने पूरी शिक्षा प्रणाली को मात्र कसरत बताया। उन्होंने कहा, सार्थक चरित्र और मनुष्यता की कसौटी को लागू करने से ही समाज को सही ढर्रे पर लाया जा सकता है। शिक्षक समाज के सपने

शिक्षक दिवस के अवसर पर नरेंद्र प्रकाश जैन को सम्मानित करते हुए शब्दम् पदाधिकारी।

क्यों पूरे नहीं कर पा रहा, यह भी सोचना होगा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए शब्दम् सलाहकार श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि हालात और परिवेश जैसा भी हो, हमें आदर्शों की बहस को आरंभ करना ही होगा, अभी उम्मीद पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है। शिक्षक को मूल्यों की गिरावट रोकनी होगी। आयोजन में शिक्षा क्षेत्र के अनेक वरिष्ठ और सम्मानित लोग सम्मिलित हुए।

'विशिष्ट शिक्षक सम्मान' के लिए शिक्षकों का चयन शिक्षा जगत के प्रमुख व्यक्तिओं एवं शब्दम् सलाहकार मंडल की सहमति से किया गया। चुने गए पीडी जैन कॉलेज के पूर्व प्राचार्य नरेंद्र प्रकाश जैन, ए.के. डिग्री कॉलेज शिकोहाबाद के पूर्व प्राचार्य रामप्रताप यादव, एस.आर. के डिग्री कॉलेज फिरोजाबाद के पूर्व रीडर डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा, नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. महेश आलोक एवं बी. डी. एम. इंटर कॉलेज शिकोहाबाद की प्रधानाचार्य डॉ. उमा भारद्वाज को वस्त्र, श्रीफल, सम्मानपत्र एवं मानदेय राशि प्रदान की गई।

बगैर चरित्र राष्ट्र निर्माण संभव नहीं

सम्मान के बदले दिया सम्मान

शिक्षक दिवस के आयोजन में उपस्थित शिक्षा जगत के विशिष्ट जन।

शब्दम् अध्यक्ष का संदेश

शिक्षक या गुरु के बिना व्यक्ति या राष्ट्र को उचित दिशा नहीं मिलती है। द्रोणाचार्य–अर्जुन, विश्वामित्र–राम, रामकृष्ण परमहंस–विवेकानंद, चाणक्य – चंद्रगुप्त और हजारी प्रसाद द्विवेदी –नामवर सिंह जैसे गुरु–शिष्यों का राष्ट्र के लिए अमूल्य योगदान रहा है। गुरु का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिस प्रकार मां कड़वी दवा को शहद में घोल कर बच्चे को पिला देती है, उसी प्रकार शिक्षक को शिक्षा के माध्यम से मूल्यों की घुट्टी पिलानी होगी। भले ही आज की युवा पीढ़ी में सच्चरित्रता और देशप्रेम जैसे मूल्य स्थापित करना शिक्षक के लिए कठिन हो गया है परंतु यह कार्य नामुमकिन नहीं है।

शिक्षक एक दीपक की तरह है जो जबतक स्वयं न जले, दूसरों को प्रकाश नहीं दे सकता।

-डॉ. राधाकृष्णन

◆ ◆ ◆

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुरमाली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ोंमें खाद डालकर महाप्राणशक्तियां बनाते हैं।

-महर्षि अरविन्द

विशिष्ट शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर उपस्थित (बाएं से) डॉ. उमा भारद्वाज, डॉ आर. पी. यादव, श्री उमाशंकर शर्मा, डॉ. ए.के. आहूजा, श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन प्राचार्य, डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा, डॉ. महेश आलोक, श्री मंजर उल वासै, डॉ. रजनी यादव।

हिन्दी संस्कृति सप्ताह

हिन्दी के रणबांकुरों को सलाम

पूर्व की भांति शब्दम् संस्था ने इस बार भी हिन्दी दिवस पर हिन्दी के 51 मेधावी छात्र–छात्राओं और उनके शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मानित कर मातृभाषा को उसका वैभव और सम्मान दिलाने का संकल्प कराया। सम्मानित होने वालों में इंटरमीडियेट (सी.बी.एस.ई.) एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के ऐसे छात्र–छात्राएं थे, जिन्होंने अपनी कक्षा की वार्षिक परीक्षा में हिन्दी विषय में 75 या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं। इस श्रेणी में नारायण महाविद्यालय और ज्ञानदीप सीनियर सैकेंडरी के कुल दस विद्यार्थी सम्मान के पात्र बने।

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत संस्था द्वारा विभिन्न स्थानों पर निबंध, कविता और कहानी लेखन प्रतियोगिताएं कराई गईं। यंग स्कॉलर्स एकेडमी, बीडीएम इंटर कॉलेज, हिन्द आवासीय कॉलोनी और इंदिरा मैमोरियल सीनियर सैकेंडरी सिरसागंज के 33 बच्चों के प्रयास सर्वश्रेष्ठ रहे, जिन्हें प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी के अनुसार 14 सितंबर को संस्कृति भवन में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया।

जिन शिक्षकों के अध्यापन एवं मार्गदर्शन के फलस्वरूप इन विद्यार्थियों को सफलता मिली उन शिक्षकों को भी शब्दम् द्वारा हिन्दी दिवस के आयोजन में सम्मानित किया गया। शब्दम् उपाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह द्वारा भेजी गई कविता को भी समारोह में प्रस्तुत किया गया। मेधावी

हिन्दी दिवस पर विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य

युवाओं को प्रेरित करने के लिए शब्दम् उपाध्यक्ष प्रो. नंदलालपाठक द्वारा संदेश भेजा गया। संदेश में कहा गया, हिन्दी केवल एक भाषा का नाम नहीं है। इसका व्यापक अर्थ भी है। अरब देशों में भारत के लोगों को हिन्दी कहते हैं। अब धीरे–धीरे हिन्दी को रोजी–रोटी की भाषा बनाना होगा। इसके लिए हम सब को समवेत प्रयास करने होंगे। हिन्दी की बात हो चुकी अब भारत को हिन्दी में बात करना है। इसी में देश का हित है।

शब्दम् की अपील

''हिन्दी सरल, सटीक और समृद्ध है, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि हिन्दी पट्टी में ही हिन्दी को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जा रहा है। हिन्दी के प्रति हीनभावना और अंग्रेजी के प्रति आकर्षण अत्यंत दुख और चिंता का विषय है। .....अक्सर हम अपनी विषमताओं और विफलताओं का दोष हिन्दी को देने लगते हैं। सफलता की ऊंचाइयां छूने के लिए आपकी पकड़ अपने विषय के ज्ञान पर आधारित होना ज़रूरी है। अपनी अल्पज्ञता का दोष भाषा को नहीं दिया जा सकता। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। हमीं ने उसे मां का स्थान दिया है। अब उसके उचित मानसम्मान के लिए भी हमीं को प्रयास करने होंगे। क्यों कि इसके लिए कोई विदेशी नहीं आएंगे।''

शिक्षा और रोजगार में हिन्दी

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाला निबन्ध

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की उपर्युक्त पंक्तियाँ हम भारतीयों को सोचने पर क्या विवश नहीं करतीं ? आखिर वह कौन–सा कारण रहा होगा, जिससे आधुनिक युग के महान साहित्यकार को निज भाषा की वकालत करनी पड़ी। दरअसल भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि बहुत गहरा सम्प्रत्यय है। प्रत्येक भाषा के साथ कोई विशिष्ट सभ्यता, संस्कृति और आत्मबोध अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। भारत में जहाँ अनेक क्षेत्रीय भाषाएं हैं, उसके साथ हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में अपना स्थान ले चुकी है। उसे दरकिनार कर शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम को अपनाकर हम अपने मूल से दूर होते जा रहे हैं। भाषा राष्ट्र की अस्मिता होती है, किन्तु हम स्वयं अपनी अस्मिता पर कुठाराघात कर रहे हैं।

किसी भी देश की प्रगति उसकी स्वयं की भाषा में ही हो सकती है। भाषा सम्प्रेषणात्मक रूप धारण करती है। जब कभी भी हमें आम जनता को जगाना पड़ा तो हमने हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं का ही प्रयोग किया, क्योंकि ये भाषाएं भारत की आत्मा में रची बसी हैं। अपनी भाषा में जो संवेदनशीलता होती है वह दूसरी भाषा में कदापि नहीं हो सकती।

विदेशी भाषा के प्रयोग के सम्बन्ध में यह भी तर्क दिया जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रेषण और दुनिया को जानने व समझने के लिए अंग्रेजी आवश्यक है। विश्व पटल पर भाषा से अधिक महत्व इस बात का होता है कि बोल कौन रहा है ? और यदि बोलने वाला महत्वपूर्ण देश या व्यक्ति है, तो वह किसी भाषा में बोले, उसकी बात को दर्जनों भाषा में रूपान्तरित कर करोड़ो लोगों द्वारा सुना व समझा जाता है। बापू ने कहा था– ''मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा जिसको गरज होगी वह सुनेगा।'' अंग्रेज़ी भाषा के पक्षपाती अन्तर्राष्ट्रीय समझ व सम्प्रेषण के लिए नहीं बल्कि अपना अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने के लिए अंग्रेजी प्रयोग कर रहे हैं। अंग्रेज़ी आज किसी प्रगति के पासपोर्ट के रूप में अधिक देखी जाती है। अनेक लोगों के लिए निःसंदेह उस यात्रा की पहली सीढ़ी के रूप में होती है, जिसकी परिणति अमरीका में ग्रीन कार्ड प्राप्त करने में होती है। ''ऐसी अंग्रेजी और शिक्षा का क्या फायदा जो अपने देश से ज्यादा दूसरे देश का उद्धार करती है।''

हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को समझना इसलिए भी नितान्त आवश्यक है। क्योंकि जब नन्हें–मुन्हें बच्चे अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में आते हैं तब अपनी भाषा के एक लाख से अधिक सीखे हुए शब्द उनके लिए व्यर्थ हो जाते हैं। वे विदेशी भाषा की उँगली पकड़कर नए सिरे से चलना सीखते हैं। फलतः न भाषा समझ पाते हैं न विषय। बार–बार असफलता उनके हाथ लगती है। उनकी प्रतिभा, मनोबल का हनन होता है। भाषा ज्ञान के चक्कर में विद्यार्थी विषय ज्ञान में पारंगत नहीं होते हैं। ''भाषा ज्ञान की तुलना में विषय ज्ञान को महत्व देना चाहिए। विषय ज्ञान का सम्यक बोध अपनी ही भाषा में हो सकता है। इसके लिए हम

हिन्दी के उत्थान के लिए संस्कृति भवन के द्वार पर सामूहिक रूप से संकल्प लेते हुए विद्यार्थी और शिक्षक–शिक्षिकाएं।

हिन्दी चुनें या क्षेत्रीय भाषाएं, क्योंकि मौलिक चिंतन विदेशी भाषा में सम्भव नहीं है।''

रोजगार के क्षेत्र में शिक्षा का माध्यम हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाएं नहीं होना चाहिए। ऐसा कहने वालों की हमेशा यही दलील रही है कि विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करने के लिए, संसार में अपना स्थान बनाने के लिए अंग्रेजी में महारत हासिल करना आवश्यक है। चलिए, इस तर्क को मान भी लिया जाए तो उसके लिए भारत के हर बच्चे को वैज्ञानिक बनाने की महत्वाकांक्षा क्यों है ? वैज्ञानिक बनने के लिए बच्चे में भी तो अभिरुचि होना आवश्यक है। भाषाएं सभी अच्छी हैं। अधिकाधिक ज्ञान का स्रोत हैं, किन्तु किसी एक भाषा के पीछे हीन भावना के कारण भागना हमारी नई पीढ़ी और हमारी संस्कृति पर अत्याचार है। सच बात तो यह है कि विकास का किसी भाषा विशेष से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

''रूस, चीन, फ्रांस आदि इसके उदाहरण हैं, क्या अपनी भाषा के माध्यम से उन्होंने प्रगति नहीं की? ये देश अपनी भाषा के जरिए नित्य नई ऊँचाईयों को छू रहे हैं।''

ज्यां ट्रेजे वर्षों पहले बेल्जियम से भारत पढ़ने आए थे। इसी दौरान उन्हें हिंदी भा गई। भारत की इस राष्ट्रभाषा को उन्होंने अपने सामाजिक अभियान और रोजी–रोटी का जरिया बना लिया। उन्होंने हिंदी के जरिये ही इस देश की जनता व उसकी भावनाओं को करीब से समझा। इसके बाद देश को मनरेगा यानी महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम जैसा नायाब फार्मूला दिया। मार्क टुली भारत आए थे बीबीसी संवाददाता बनकर, लेकिन वह और उनकी पत्नी इस देश में हिंदी के साथ ही रच बस गए। रस्किन बांड, टॉम आल्टर, बैरीजॉन जैसे विदेशी मूल के ऐसे तमाम लोग हैं, जो न सिर्फ भारत में बसे, बल्कि हिंदी को अपनाकर अपनी अलग पहचान भी बनाई है। हिंदी कहीं न कहीं उनकी

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत सिरसागंज के इंदिरा मैमोरियल सीनियर सैकेंडरी पब्लिक स्कूल में निबंध प्रतियोगिता में सम्मिलित छात्र–छात्राएं।

लाइफ का टर्निंग पाइंट भी बन गई।

इंडिया में बहुत सी लैंग्वेज बोली जाती हैं लेकिन यहाँ रहकर अगर वर्क करना है, तो हिंदी की नॉलेज बहुत जरूरी है यह कहना है, निहांगो सेंटर की डायेरेक्टर का। केवल नॉरिका ही नहीं बल्कि कई ऐसी विदेशी प्रतिभाएँ हैं, जिन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाकर अपना जीवन संवारा है।

केवल विदेशी ही नहीं बल्कि देशी लोगों में शामिल फिल्म डायरेक्टर, संगीतकार, गायक, मीडिया कर्मी, लेखक, कवि, अध्यापक एंव शोध कार्यों में संलग्न लोगों को रोजगार हिन्दी भाषा ने प्रदान किए एवं प्रदान करती रहेगी।

भारत में सभी शिक्षा का माध्यम अंगेजी को बनाना सर्वथा अनुचित है। हमें निज भाषा 'हिन्दी' को वरीयता देनी होगी एवं हिन्दी भाषी क्षेत्र ही नहीं बल्कि संपूर्ण देश में हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार करना होगा। इस भाषा में शिक्षा देश को एकसूत्र में बाँधेगी एवं साथ ही हिन्दी भाषा को रोजगार क्षेत्र में विस्तृत जगह देने पर ही देश उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

–कुमारी शिल्पी यादव
एम.एससी. भौतिकी, शिकोहाबाद।

शब्दम् ने किए हिन्दी के 51 मेधावी सम्मा

कोहाबाद जागरण

शब्दम् ने किया हिंदी के रणबांकुरों को सलाम

गांधी जयंती सप्ताह

चरित्र निर्माण की श्रृंखला में गांधी जयंती के अवसर पर शब्दम् ने महात्मा गांधी के विचारों एवं संदेशों को छात्र–छात्राओं के बीच व्यापक रूप से फैलाया। पूरे एक सप्ताह तक विभिन्न स्थानों पर स्कूली बच्चों के बीच आयोजन होते रहे। एक हज़ार से अधिक बच्चों को प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन और लघु वृत्तचित्र द्वारा गांधी के जीवन–दर्शन से परिचित कराया गया। शब्दम् की साथी संस्था पर्यावरणमित्र ने दो अक्टूबर को जैविक उत्पाद प्रदर्शनी के माध्मय से गांधी के विचारों का प्रसार किया।

24 सितंबर को शिकोहाबाद के बी.डी.एम. म्यु. इंटर कॉलेज से गांधी जयंती सप्ताह आरंभ हुआ, जहां राष्ट्रपिता से संबंधित प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अगला कार्यक्रम गार्डेनिया इंटर कॉलेज में प्रश्नमंच एवं निबंध प्रतियोगिता के रूप में हुआ। इसके बाद सिरसागंज के ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी, गिरधारी इंटर कॉलेज और इंदिरा मैमोरियल सीनियर सैकेंडरी पब्लिक स्कूल में प्रश्नोत्तरी, निबंध और रिचर्ड एटनबरो की 'गांधी' फिल्म प्रदर्शन के आयोजन किए गए।

विद्यालयों में संपन्न कराये गए इन आयोजनों के दौरान शब्दम् प्रतिनिधियों ने महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन पर व्याख्यान के माध्यम से जानकारी दी। उपरोक्त सभी विद्यालयों के प्रबंधतंत्र एवं

इंदिरा मैमोरियल स्कूल में गांधी प्रश्नोत्तरी में पुरस्कृत छात्र–छात्राओं के साथ कॉलेज की निदेशक एवं शब्दम् प्रतिनिधि।

गार्डेनिया इंटर कॉलेज में प्रतियोगी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए शब्दम् पदाधिकारी।

छात्रों ने शब्दम् के प्रयास को रचनात्मक और अनुकरणीय कहा। आयोजन में श्री भूपेंद्र यादव (गार्डेनिया), डॉ. उमा भारद्वाज (बी.डी.एम.), श्रीमती एम. के. राना (इंदिरा मैमोरियल), श्री रनवीर सिंह शर्मा (गिरधारी इंटर) एवं श्री प्रवेश यादव (ब्राइट स्कालर्स) का सराहनीय सहयोग रहा।

बीडीएम कॉलेज में छात्रा को पुरस्कृत करते हुए प्रधानाचार्या।

गिरधारी इंटर कॉलेज में गांधी निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्राएं।

शांति चाहिए तो गांधी दर्शन को अपनाइए

गांधी जयंती सप्ताह में शब्दम संस्था ने कराया आयोजन

गांधी के आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

शब्दम् ने किया 'गांधी को जानो' प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतिस्पर्धा

इंदिरा मेमोरियल विद्यालय में बापू को जानने उमड़े छात्र

शिकोहाबाद

'बापू ने ईश्वर को किस नाम से पुकारा'

हिन्दुस्त

स्थापना दिवस समारोह

हिन्दी का भविष्य सुनहरा है : प्रो. केदारनाथ सिंह

समकालीन हिन्दी कविता के शीर्षस्थ कवि प्रो. केदारनाथ सिंह के गरिमापूर्ण सान्निध्य में शब्दम् का नवम् स्थापना दिवस समारोह संपन्न हुआ। विशिष्ट साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें शब्दम् साहित्य सम्मान –2013 से सम्मानित करते हुए शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने सम्मानपत्र, अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंट किया।

समारोह में 'हिन्दी का भविष्य' विषय पर प्रो. केदारनाथ सिंह का व्याख्यान महत्वपूर्ण था। उन्होंने हिन्दी के चाहने वालों को आश्वस्त किया कि इस भाषा का भविष्य सुनहरा है। परंतु चेतावनी भी दी कि हिन्दी को अपना रवैया उदार रखना होगा। अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय बनाना होगा और उनके शब्दों को आत्मसात करना होगा।

केदारजी ने सबसे पहले हिन्दी के संकटों को गिनाया। उन्होंने कहा कि एक समय रूस में बढ़ रहे पठन–पाठन ने वैश्विक पटल पर हिन्दी के खड़े होने की उम्मीद जगाई थी। लेकिन वहां की परिस्थितियां बदल गईं। इधर शासक वर्ग ने इसे राजभाषा का दर्जा देने के बाद अपने दायित्व की इतिश्री कर ली और यह केवल

नवम् स्थापना दिवस पर प्रो. केदारनाथ सिंह को सम्मानित करते हुए श्रीमती किरण बजाज। साथ में डॉ. रजनी यादव, डॉ. महेश आलोक, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, प्रो. गोबिन्द प्रसाद एवं अन्य।

सभा संबोधित करते हुए प्रो. केदारनाथ सिंह

कार्यालयों के नेमप्लेट तक रह गई।

लेकिन फिर भी वह आम आदमी की ज़रूरत के रूप में पल–बढ़ रही है। भारत के बाहर सूरीनाम और मारीशस जैसे स्थानों पर उसे बोला जा रहा है। चीन में रहने वाले हिन्दी प्रेमी व्यापारी, और पर्यटक हिन्दी सीखने को उत्सुक हैं। ऐसे में कई प्रश्न आ सकते हैं, लेकिन हिन्दी समाप्त नहीं हो सकती। भाषाएं तो बनती–बिगड़ती हैं, लेकिन एक बड़े भूभाग की भाषा इस प्रकार समाप्त नहीं हो सकती है। मनुष्य की बोली विश्व की सबसे बड़ी डिक्शनरी है। वहां पर भाषा सुरक्षित रहती है। यही वजह है कि एक नहीं, अनेक हिन्दियां दिखाई देती हैं।

शब्दम् के न्यासी एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए शब्दम् के हिन्दीहित कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में हिन्दी का एक नया स्वरूप देखने को मिलेगा, परंतु हिन्दी वालों को अपनी संकीर्णता से बाहर आना होगा।

श्रीमती किरण बजाज ने संस्था के कार्यों का परिचय देते हुए स्वागत भाषण में कहा कि शब्दम् के नवम् स्थापना दिवस पर मुझे ऐसा लग रहा है कि आज शब्दम् और मेरी साहित्यिक चार धाम यात्रा सम्पूर्ण हुई। पहला धाम रामेश्वरम्, नन्दलाल पाठक के रूप में मुझे मिला। फिर 2004 में उदयप्रताप जी के रूप में दूसरा जगन्नाथ धाम मिला। नामवर सिंह के रूप में पिछले साल द्वारिकाधीश जी यहाँ पधारे और आज केदारनाथ जी स्वयम् दर्शन देने आ गये। इस तरह आज का दिन हम सबके लिए आनंद उत्सव है। श्रीमती बजाज ने

श्रोताओं के रूप में उपस्थित गणमान्य लोग

वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार नंदलाल पाठक की ग़ज़ल भी प्रस्तुत की।

डॉ. महेश आलोक ने प्रो. केदारनाथ सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में प्रो. केदारनाथ सिंह एवं श्री उदयप्रताप सिंह द्वारा किए गए काव्यपाठ ने वातावरण को रसपूर्ण किया। कार्यक्रम में अनेक कवि, साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं बुद्धिजीवी वर्ग के लोग उपस्थित हुए।

प्रो. केदार नाथ सिंह की कविता

चीटियों की रुलाई

सुनो- इस शहर को यहां से उठाओ
और रख दो मेरे कंधे पर
मैं इसे कहीं ले जाना चाहता हूं
मैं ले जाना चाहता हूं इस शहर को
इस शहर से दूर
जैसे गौरैया ले जाती है अपना मटर का दाना

सुनो, आज सुबह उठा तो आसमान मेरी
खिड़ की से इस तरह दिखा
जैसे कोई तौलिया सूख रहा हो
कौवे की आवाज़ ऐसी सुनाई पड़ी
जैसे वह भोंपू की आवाज़ हो
एक जाता हुआ वायुयान ऐसा लगा
जैसे वह आता हुआ वायुयान हो
मेरी तरफ़ !

सुनो, लगता है यह शहर अपनी जगह से
खिसककर
किसी ग़लत अक्षांश पर आ गया है
कि अपनी धुरी से
उतर गए इसके चक्के
और इस इतने बड़े शहर में अब इतनी भी जगह
नहीं
कि एक गर्भवती चीटी
कहीं रख दे अपना अंडा

सुनो, देर बहुत हो चुकी है
बस ज़ रा हाथ बढ़ाओ
और इस शहर को इसकी नींव की सारी
ऊष्मा समेत यहां से उठाओ
और रख दो मेरे कंधे पर
मैं इसे ले जाना चाहता हूं किसी मैकेनिक के
पास और वह अगर न मिले तो किसी बूढ़े
खद्दी के पास ही ले जाना चाहता हूं इसे

सुनो, मुझे खद्दी
बड़े काम के लगते हैं इन दिनों
नहीं - मुझे कोई भ्रम नहीं
कि मैं इसे ढोकर पहुंचा दूंगा कहीं और
या किसी अपने करिश्मे से
बचा लूंगा इस शहर को
मैं तो बस इसके कौवों को
इनका उच्चारण
इसके पानी को
उसका पानीपन
इसकी त्वचा को
उसका स्पर्श लौटाना चाहता हूं।
मैं तो बस इस शहर की
लाखों लाख चीटियों की मूक रुलाई का
हिन्दी में अनुवाद करना चाहता हूं।

सुनो, क्या तुम सुन रहे हो उसे ?

परिचय प्रो. केदार नाथ सिंह **जन्म** – 1934, चकिया (उत्तर प्रदेश) **कर्म क्षेत्र** – जवाहरलाल नेहरू विवि, नई दिल्ली के 'भारतीय भाषा संस्था' के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्ति। 'प्रोफेसर एमेरिट्स' के रूप में कार्यरत। **विधाएं** – कविता, आलोचना **प्रमुख कृतियां** – अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, यहां से देखो, बाग, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, तालस्ताय और साइकिल, कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिंब विधान, मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत, मेरे साक्षात्कार, तानाबाना, समकालीन रूसी कविताएं, कविता दशक, साखी, शब्द (संपादन) **चर्चित कविता संकलन** – 'तीसरा सप्तक' के सहयोगी कवियों में एक। **सम्मान** – साहित्य अकादमी (1989), मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, कुमार आशान पुरस्कार, दिनकर पुरस्कार, जीवनभारती सम्मान, व्यास सम्मान। अन्य कई प्रतिष्ठित सम्मान एवं पुरस्कार। **अनुवाद** – लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी, जर्मन और हंगेरियन भाषा में कविताओं का अनुवाद एवं काव्य पाठ हेतु अनेक देशों की यात्राएं।

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

शास्त्रीय नृत्य

पद्मश्री आनंदा शंकर द्वारा प्रस्तुति

शिकोहाबाद में 20 अप्रेल 2013 को शब्दम् और स्पिक मैके के संयुक्त तत्वावधान में भरत नाट्यम और कुचिपुड़ि नृत्य का कार्यक्रम आयोजित हुआ; जिलाधिकारी संध्या तिवारी ने इस समारोह का शुभारंभ किया।

विश्व विख्यात नृत्यांगना डॉ. आनंदा शंकर जयंत ने आयोजन में अपनी नृत्यकला को सजीव ढंग से प्रस्तुत किया। कृष्ण द्वारा माखनचोरी करना, द्रोपदी चीरहरण, नृसिंह अवतार, बालकृष्ण के मुख में विराट रूप का दर्शन आदि पौराणिक प्रसंगों को प्रस्तुत कर उन्होंने सभी की सराहना बटोरी।

कुचिपुड़ि और भरतनाट्यम के अंतर को उन्होंने मुद्राओं के उदाहरण से समझाते हुए उपस्थित लोगों एवं स्कूली बच्चों को बताया कि भरतमुनि द्वारा रचित नाटयशास्त्र ही नृत्यकला का मूल स्त्रोत है। भरतमुनि को यह विद्या ब्रह्माजी ने दी। भरतनाट्यम और कुचिपुड़ि नृत्य की विधाएं देश की सांस्कृतिक आत्मा हैं। एक विधा पूरब से और दूसरी दक्षिण भारत से संबंध रखती है। आनंदा ने कहा कि नृत्य मानव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। हर

भरतनाट्यम नृत्य की भावपूर्ण प्रस्तुति करते हुए आनंदा शंकर।

रोज, हर व्यक्ति नाचता हैं। उसकी आम दिनचर्या के कई हावभाव नाच की श्रेणी में हैं, परंतु उनका प्रकटीकरण एक क्रम में नहीं होने से उन्हें स्पष्ट रूप से नृत्य नहीं कहा जा सकता है।

आनंदा शंकर ने कहा कि नृत्यकला मात्र शरीर को कुछ आकृतियों और लय–ताल के साथ मंच पर प्रस्तुत कर देना नहीं है। कोई भी संस्कृति या कला व्यक्ति या उसके समाज की परिभाषा होती है। संस्कृति से पूरे समाज की पहचान बनती है। उन्होंने कहा कि नृत्य उनके लिए परमेश्वर के समीप जाने का माध्यम है।

उन्होंने आज के सिनेमाई नृत्य को भौंडा प्रदर्शन बताया और कहा कि इसका उद्देश्य मात्र सस्ता मनोरंजन है।

भरतनाट्यम नृत्य की भावपूर्ण प्रस्तुति करते हुए आनंदा शंकर।

आनंदा शंकर का स्वागत करते हुए श्रीमती किरण बजाज एवं जिलाधिकारी श्रीमती संध्या तिवारी।

इस सदन में मै अकेला ही दिया हूँ
मत बुझाओ
जब मिलेगी
रोशनी मुझसे मिलेगी।

– रामावतार त्यागी

समन्वय
प्रायोजित कार्यक्रम

शास्त्रीय संगीत

पद्मश्री पं. सतीश व्यास द्वारा संतूर वादन

शब्दम् द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम की श्रृंखला में स्पिक मैके के सहयोग से 13 सितंबर को संतूर वादक पद्मश्री पंडित सतीश व्यास ने रागों की तान छेड़ी।

संतूर के सुरीले स्वरों के माध्यम से राग रागेश्वरी की रोमांचित करने वाली धुन ने श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इसके बाद पंडितजी ने संतूर की धुन में बधाई गीत ''उतारें नजरिया, बन्ना–बन्नी के संग, बाजे शहनाई''प्रस्तुत किया। तबले पर रोहित मजूमदार ने संगत की।

इस अवसर पर व्यासजी ने संगीत की परंपरा और उसके घरानों के बारे में उपस्थित श्रोताओं एवं स्कूली बच्चों को बताया। संतूर के स्वर और राग एवं तबले के रूपक और ताल की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि संतूर मूलतः कश्मीरी संस्कृति का वाद्य है। इसका जन्म सौ तारों की वीणा से हुआ है।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज के संदेश में कहा गया कि कोई भी कला हमारी संस्कृति के वैभव को प्रतिबिंबित करती है। इस मायने में संगीत की भूमिका बेजोड़ है। संगीत मनुष्य की संवेदनाओं को जागृत कर एक बेहतर इंसान बनाता है। विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि संगीत के प्रभाव से फल, फूल और पौधे भी अच्छा विकास करते हैं। हमारी मानसिक स्थिति को अच्छा रखने में भी संगीत का प्रयोग बेहतर सिद्ध हुआ है।

शब्दम् द्वारा अगले दिन स्कूली बच्चों को शास्त्रीय संगीत ओर संतूर से परिचित कराने के लिए मैनपुरी के कुंवर आर.सी. महाविद्यालय और सिरसागंज के ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी में पंडित सतीश व्यास द्वारा संतूर वादन प्रस्तुत किया गया।

संतूर वादन प्रस्तुत करते हुए पंडित सतीश व्यास और उपस्थित श्रोता।

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

रसखान स्मृति समारोह
'वा छवि को रसखान विलोकत'

हिन्दी कविता एवं साहित्य के कुछ अनूठे–कालजयी रचनाकार जो समय के साथ बिसरा दिए गए, उनके कृतित्व को पुनर्स्थापित करने के लिए शब्दम् अपने स्तर पर प्रयास करता रहता है। इस कड़ी में कृष्णभक्त कवि रसखान को केन्द्र में रख कर शब्दम् द्वारा विशिष्ट आयोजन किया गया।

17 अगस्त 2013 को 'वा छवि को रसखान विलोकत' शीर्षक से मथुरा के श्रेष्ठ होटल लैंड्स इन में परिचर्चा एवं सवैया गायन का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के विशिष्ट सहयोग से हुए इस आयोजन में द ब्रज फाउंडेशन ने सहप्रायोजक के रूप में सहभागिता की।

सर्वश्री उदयप्रताप सिंह, किरण बजाज एवं विनीत नारायण ने श्रीनाथजी के दिव्य चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्जवलित किया। इसके उपरांत श्रीमती बजाज ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए तीन संगठनों के संयुक्त तत्वावधान को अद्भुत संयोग बताया। उन्होंने कहा, आज की परिस्थिति में सांप्रदायिक सद्भाव को लेकर रसखान की अद्वितीय कृष्णभक्ति अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। दिलों के बीच बढ़ती दूरियों को कम करने के लिए

समारोह की स्मारिका का विमोचन करते हुए (बाएं से) श्री शेखर बजाज, श्रीमती किरण बजाज, श्री उदय प्रताप सिंह, डॉ. सुधाकर अदीब एवं श्री विनीत नारायण।

श्रीनाथजी के दिव्य चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्जवलन।

ऐसे आयोजन उपयोगी हैं। रसखान सरीखा कृष्णभक्ति का उदाहरण बेजोड़ है। ऐसे ही लोग दिलों में प्रेम की गंगा–जमुना बहाने का चमत्कार कर सकते हैं।

प्रथम सत्र में परिचर्चा आरंभ करते हुए डॉ. श्रीभगवान शर्मा ने विषय का प्रवर्तन किया। उन्होंने कहा कि रसखान ने विधर्मी होते हुए भी हिन्दी काव्य और भक्ति साहित्य में जो अप्रतिम योगदान दिया है, उसकी तुलना करोड़ों हिन्दू से भी नहीं की जा सकती है।

डॉ. सईद अहमद 'सईद' ने अपने विचार रखते हुए कृष्णभक्ति साहित्य में रसखान के स्थान को श्रेष्ठ बताया। ये प्रेमोन्मत्त भक्त कवि के रूप में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं, परंतु वे किसी बंधी हुई पद्धति पर चलने वाले कवि नहीं हैं। रसखान के कृष्णभक्त काव्य में माधुर्य भक्ति ने ही उत्कृष्ट स्थान पाया है।

डॉ नटवर नागर ने परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए पुष्टिमार्ग में रसखान के स्थान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि वल्लभाचार्य के पश्चात उनके द्वितीय पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने अपने पिता द्वारा प्रवर्तित दलितोद्धार की परम्परा को और भी अधिक वेग प्रदान किया। पुष्टिमार्गीय दीक्षा की यह विशेषता है कि यदि कोई विधर्मी पुष्टिमार्ग में दीक्षित होता है, तो आचार्य उसे धर्म छोड़ने के लिये नहीं कहते, वह अपने धर्म में रहकर भी

सवैया गायन की प्रस्तुति देते ब्रज के कलाकार।

वैष्णवत्व का पालन करते हुए, श्रीकृष्ण की भक्ति कर सकता है। रसखान भी मुसलमान रहते हुए श्रीकृष्ण के परम भक्त हुए।

डॉ. केशवदेव ने कहा कि रसखान के काव्य में लोक मानस के सहज विश्वास, जीवन–चिंतन, धर्म–ज्ञान, शिक्षा एवं व्रत–अनुष्ठानों से परिपूर्ण जीवन–शैली तथा ईश्वरीय विश्वास के दिग्दर्शन सर्वत्र झलकते रहते हैं। रसखान के कवित्त और सवैयों में ब्रज के लोक–जीवन का जीवंत रूप चित्रित है।

डॉ. उमेश चंद्र शर्मा ने रसखान के काव्य में अमृतत्व के रस को रेखांकित करते हुए कहा, रसखान के अनुसार इन्द्रियों की सार्थकता कृष्णमयता में ही सन्निहित है। अर्थात् वाणी, कर्ण, नेत्र, हस्तपाद आदि सभी कृष्ण भक्ति में सराबोर रहें। उस त्रिभंगललित की रूप माधुरी को जो एक बार देख लेगा फिर उसका मन उससे जुड़ता ही चला जाता है, लोक–लाज, भय–चिंता आदि से अति दूर हो जाता है।

रसखान काव्य के भावगांभीर्य की चर्चा की करते हुए डॉ. नीतू गोस्वामी ने कहा कि जो काव्य रचना मनुष्य के ह्रदय पर प्रभाव छोड़ने में सक्षम होती है, वास्तव में वही रचना श्रेष्ठ होती है।

मुख्य अतिथि डॉ. सुधाकर अदीब के वक्तव्य ने परिचर्चा को चरम पर पहुंचाया। उन्होंने कहा कि ब्रज माधुर्य के साथ श्रीकृष्ण की भक्ति को जिस प्रकार डूब कर रसखान ने निमज्जित किया है, वह

रसखान समारोह में संगीत नाटिका की प्रस्तुति।

अनुपम है। डॉ. अदीब ने मधुरकंठ में कवित्त और सवैयों का गायन भी किया।

प्रथम सत्र का समापन करते हुए समारोह अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह ने रसखान के चरित्र और व्यक्तित्व की सारगर्भित मीमांसा की और उन्होंने कहा कि इस तरह के अनूठे आयोजन निरंतर होते रहने चाहिए। शब्दम् का यह प्रयास अत्यंत उपयोगी है।

दूसरे सत्र में भक्तिरस से रंजित रसखान के कवित्त और सवैयों का गायन किया गया। परंपरागत साज और आवाज की जुगलबंदी एवं ब्रजभाषा की मिठास वाले स्वरों में गाये गए सवैयों से सभागार में उपस्थित श्रोता विभोर हो गए।

भगवान श्रीनाथ के दर्शन के बाद एक मुसलमान युवक के दायरे से बाहर निकल कर रसखान को भक्त–कवि के जीवन में ले जाने वाले क्षणों को संगीत नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रभु का दर्शन पाकर धन्य और विभोर हुए रसखान के दृश्य ने भावुकता का चरम उपस्थित कर आयोजन के शीर्षक 'वा छवि को रसखान विलोकत' को बखूबी निरूपित किया।

आयोजन में सर्वश्री वृंदावन शोध संस्थान के अध्यक्ष सत्यप्रकाश फरसैया, ब्रजकला केन्द्र के निदेशक श्री बंसल, राजकीय संग्रहालय के पूर्व निदेशक आर. पी. सिंह, डॉ. रामौतार शर्मा, पद्नाभ गोस्वामी, जयप्रकाश शर्मा, ओमप्रकाश धानुका, अंशुमान बावरी मुख्य रूप से उपस्थित थे। इसके अलावा अनेक साहित्यानुरागी, कवि, साहित्यकार एवं बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों ने अपनी गौरवमयी उपस्थिति देकर आयोजन को सार्थक किया।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं :

भाव की गहराई, भाषा की सरलता,

समारोह के समापन पर उपस्थित (बाएं से) डॉ.सुधाकर अदीब, उप्र रत्न चक्रेश जैन, श्री विनीत नारायण, डॉ. श्रीभगवान शर्मा, श्री शेखर बजाज, श्रीमती किरण बजाज, श्री उदयप्रताप सिंह, डॉ. नीतू गोस्वामी, डॉ.नटवार नागर, डॉ. उमेश चंद्र शर्मा, डॉ. केशवदेव शर्मा, डॉ महेश आलोक, श्री पद्मनाभ गोस्वामी।

कल्पना की उड़ान और कवित्त की तन्मयता ने रसखान को उच्चतम कोटि में स्थापित कर दिया है। रसखान ने बहुत अधिक नहीं लिखा परंतु जो भी लिखा बेजोड़ लिखा। .....राष्ट्रीय एकता के लिए हमें और भी रसखान चाहिए। रसखान ही क्यों, अमीर खुसरो, गोस्वामी बिट्ठलनाथ, मलिक मुहम्मद जायसी और अब्दुलरहीम खानखाना भी चाहिए।

रसखान समारोह के शीर्षक की कलात्मक प्रस्तुति एवं सजावट।

रसखान की स्मृतियों को किया जाएगा ताजा

रसखान पर संगोष्ठी में आज जुटेंगे दिग्गज

रसखान के काव्य में दिलों को जोड़ने का उपक्रमः किरण

रसखान के साहित्य पर मंथन

आनंद के पलों का रसास्वादन करते हुए सुधी श्रोतागण।

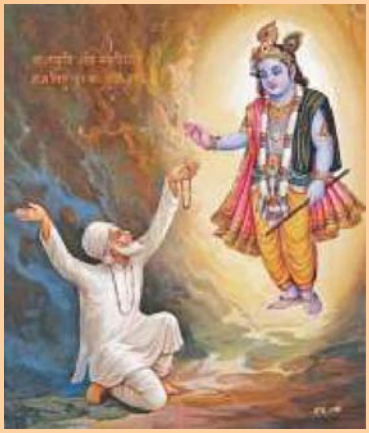

रसखान का संक्षिप्त परिचय :

कृष्णभक्त कवियों में रसखान का नाम बहुत प्रसिद्ध है। इनके जन्म, मृत्यु और निवास का कोई स्पष्ट विवरण नहीं है। मात्र उनकी रचनाओं में आए प्रसंगों को आधार बना कर उनका जन्म 1533 से 1548 ईस्वी के मध्य और मृत्यु 1618 ईस्वी के आसपास मानी जाती है। दिल्ली के निकट उनका मूल निवास माना जाता है।

दिल्ली में तत्कालीन सत्ता के लिए मचे द्वन्द्व और मारकाट से व्यथित कोमल युवा मन रसखान, प्रेमानंद की खोज में वृंदावन आ गए। ऐसा उल्लेख मिलता है कि एक युवती से उनकी प्रीति थी, लेकिन उनके सांसारिक प्रेम के मार्ग पर जल्द ही ऐसा मोड़ आ गया जिसने उन्हें अलौकिक प्रेम के पथ का पथिक बना दिया। वे श्रीनाथजी के दर्शन कर कृष्णभक्त हो गए। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से दीक्षा ली। 'दौ सौ वैष्णवन की वार्ता' में इनके विषय में बहुत कुछ आया है।

बादशाह वंश के जन्मजात मुसलमान रसखान ने स्वयं को राज्यलिप्साजन्य द्वन्द्व से मुक्त कर जिस श्रद्धा, प्रेम और भक्तिमय रस–सागर में निमज्जित किया, उसी में उनके वास्तविक काव्य व्यक्तित्व का मधुर रूप ढला। प्रेम तत्व के निरूपण में उन्हें अद्‌भुत सफलता मिली है। उनका प्रेम वर्णन बड़ा सूक्ष्म, व्यापक एवं विशद है। उनके काव्य का प्रमुख रस श्रृंगार है, जिसके आलम्बन हैं – श्रीकृष्ण। दूसरा प्रमुख रस वत्सल है। श्रीकृष्ण के बाल रूप की माधुरी का वर्णन उन्होंने यद्यपि गिने–चुने छन्दों में ही किया है, पर उनकी काव्यात्मक गरिमा सूर और तुलसी के बाल–वर्णन की समता करने में भली भांति सक्षम है।

रसखान की 'प्रेमवाटिका' और 'दानलीला' कृतियों के अतिरिक्त उनकी संपूर्ण वाणी मुक्तक सवैयों में आबद्ध है। वर्तमान में 'सुजान रसखान' सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसमें 181 सवैये, 17 कवित्त, 12 दोहे और 4 सोरठे हैं। 'प्रेम वाटिका' में राधाकृष्ण को प्रेमोद्यान का मालिन–माली मान कर प्रेम के गूढ़ तत्व का सूक्ष्म निरूपण किया गया है। 'दानलीला' केवल 11 छंदों का छोटा सा पद्य प्रबंध है जिसमें राधाकृष्ण का संवाद वर्णित है। एक अन्य कृति 'अष्टयाम' भी प्रकाश में आई है। इसमें दोहा के माध्यम से श्रीकृष्ण के प्रातः जागरण से लेकर रात्रि शयनपर्यंत दिनचर्या एवं क्रीड़ाओं का वर्णन है।

वास्तव में काव्य रचना रसखान का साध्य नहीं था और न ही उनकी वाणी का विलास धन–वैभव की प्राप्ति के निमित्त था। उन्होंने तो अनन्त – अलौकिक रस के आगार श्रीकृष्ण के लीलागान के रसास्वादन में ही स्वयं को कृतकृत्य समझा।

सेस गनेस महेस दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं,
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं।
नारद से सुक व्यास रटैं, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं,
ताहि अहीर की छोहरियां, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।

धूर भरैं अति सोभित स्याम जु तैसी बनी सिर सुंदर चोटी,
खेलत खात फिरै अंगना पग पैंजनी बाजती पीरी कछौटी।
वा छवि को रसखान विलोकत बारत काम कला निज कोटी,
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सौं लै गयौ माखन रोटी।

मानुष हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन,
जो पशु हौं तो कहा बस मेरौ चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो लियो कर छत्र पुरंदर कारन,
जो खग हौं तो बसेरौ मिलै कालिंदिकूल कदम्ब की डारन।

मोतिन माल बनी नट के, लटकी लटवा लट घूँघर वारी,
अंग ही अंग जराव लसै अरू सीस लसै पगिया जर तारी।
पूरब पुन्यनि ते रसखानि सु मोहिनी मूरति आनि निहारी,
चार्‌यौ दिसान की लै छबि आनि कै झाँकें झरोखे में बाँके बिहारी।

सुनियै सबकी कहियै न कछू रहियै इमि या मन–बागर में,
करियै ब्रत नैम सचाई लिये जिनतैं तरिये मन सागर में।
मिलियै सबसौं दुरभाव बिना रहियै सतसंग उजागर में,
रसखान गुबिन्दहिं यौं भजिये जिमि नागरि को मन गागर में।

मोर पखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरे पहिरौंगी,
ओढ़ पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी।
भावतो वाहि मेरौ रसखान सो तेरे कहे सब स्वांग करौंगी,
वा मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

'वा छवि को रसखान विलोकत' राय और प्रतिक्रियाएं

रसखान समारोह के सुधी श्रोताओं से एक निर्धारित प्रारूप पर उनकी राय जानी गई। राय और प्रतिक्रियाएं जानना हमारे लिये सुखद अनुभव रहा। करीब 90 प्रतिशत लोगों ने आयोजन के विषय, रूपरेखा और व्यवस्थाओं को उत्तम बताया। परिचर्चा के दौरान प्रस्तुत किए गए वक्तव्यों पर अलग–अलग राय मिली। डॉ. उमेश चंद्र शर्मा एवं डॉ. सईद अहमद 'सईद' के संबोधन को सर्वाधिक पसंद किया गया। दूसरे सत्र की भावपूर्ण प्रस्तुतियों संगीत नाटिका और सवैया गायन को भी लोगों ने खूब सराहा।

प्रतिक्रियाओं की झलक :

- परम सुखद अनुभूति, उत्तम व प्रशंसनीय प्रयास। इसे निरंतरता प्रदान करें। साधुवाद।
  – डॉ. पी.एस. अस्थाना (आगरा)
- आप लोगों ने दूर से आकर संवेदनशीलता और पहली बार में 'शब्दम्' का बहुत अच्छा और आदर्श परिचय स्थापित किया। ब्रजभूमि को आपकी रचनात्मकता की महती आवश्यकता है।
  –उदयन शर्मा (वृन्दावन)
- रस परंपरा को स्थायित्व दिया जाए। ब्रजभाषा कवि सम्मेलन भी आयोजित हो।
  – डॉ. राजेन्द्र मिलन (आगरा)
- 8 के स्थान पर 4 वक्ता रखे जाएं ताकि उन्हें तसल्ली से सुना जा सके। कार्यक्रम श्रेष्ठ है। आयोजकों को हार्दिक साधुवाद। अन्य ब्रज कवियों पर भविष्य में आयोजन हों।
  –डॉ. शशि तिवारी (आगरा)
- कार्यक्रम अति उत्तम रहा। रसखान पर कार्यक्रम ब्रज में पहली बार कराया गया है। अतः समय कम प्रतीत हुआ। आगे कम से कम दो दिन का कार्यक्रम रखा जाय।
  –कमल कुमार गौड़ (बरसाना, मथुरा)
- ब्रज की माटी पर सूरदास पर केन्द्रित कार्यक्रम भी किए जा सकते हैं।
  – प्रशांत उपाध्याय (शिकोहाबाद)
- ब्रज में इस प्रकार के आयोजनों को प्रतिवर्ष स्थाई रूप से किया जाना चाहिए। ताकि भाषा के प्रचार–प्रसार को गति मिल सके।
  – डॉ. जी. सी. चतुर्वेदी (इटावा)

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

रुदाली :
रस और भावों से परिपूर्ण जीवन की जीत का उत्सव

'प्रयास' ऑकलेंड (न्यूजीलेंड) स्थित थियेटर ग्रुप है जो अंग्रजी में भारतीय नाटक प्रस्तुत करते हैं।

पहले सत्र 2012 में 'रुदाली' नाटक के सफल मंचन के बाद उन्हें 'ऐज' ने, जो कला के प्रोत्साहन तथा प्रबंधन का अग्रणी संगठन है, 'रूदाली' के दूसरे सत्र के लिए आमंत्रित किया। ऑकलेंड नगर के बीचों–बीच स्थित उनका अपना मंचन स्थल है। 17 से 26 अक्टूबर 2013 के दौरान कुल सात प्रदर्शन हुए जिसमें ऑकलेंड दिवाली उत्सव भी शामिल है।

'रुदाली' में 23 कलाकार और 6 सदस्यों 'रुदाली' को प्रमुख समाचारपत्रों तथा इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से काफी प्रशंसा मिली। ऑकलेंड की मुख्यधारा के नाट्य परिवेश में अपने आपको सफलतापूर्वक स्थापित करने की दिशा में सामुदायिक थियेटर की यह यात्रा पूरी तरह संपन्न हुई है।

'शब्दम्' और 'प्रयास' का आपसी संबंध काफी पुराना है। 'शब्दम्' सन् 2009 से लगातार 'प्रयास' के नाटकों को अपना समर्थन देता आ रहा है। इस बार उन्हें दूसरे सत्र की प्रथम रात्रि के उद्घाटन के लिए श्री शेखर बजाज की उपस्थिति का

'रुदाली' नाट्य के प्रस्तुतिकरण को अपनी अभिनयकला से मर्मस्पर्शी बनाते हुए थियेटर ग्रुप के कलाकार।

अवसर मिला। प्रथम रात्रि के प्रदर्शन के बाद श्री बजाज ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा कि सामाजिक मुद्दे कहानी तक सीमित नहीं हैं बल्कि एक वास्तविक ज्वलंत समस्या हैं।

श्री बजाज ने सब कलाकारों के प्रदर्शन की सराहना की। वे मुख्यपात्र सनीचरी की भूमिका में पेट्रीशिया विकमेन के अभिनय से विशेष प्रभावित थे।

रिपोर्ट : सुदीप्ता व्यास (ऑकलेंड)

नाट्य प्रस्तुति के आरंभ से पूर्व कलाकारों से परिचय प्राप्त करते हुए शब्दम् के वरिष्ठ सदस्य श्री शेखर बजाज।

'रुदाली' नाट्य के एक भावपूर्ण दृश्य को प्रस्तुत करते हुए कलाकार।

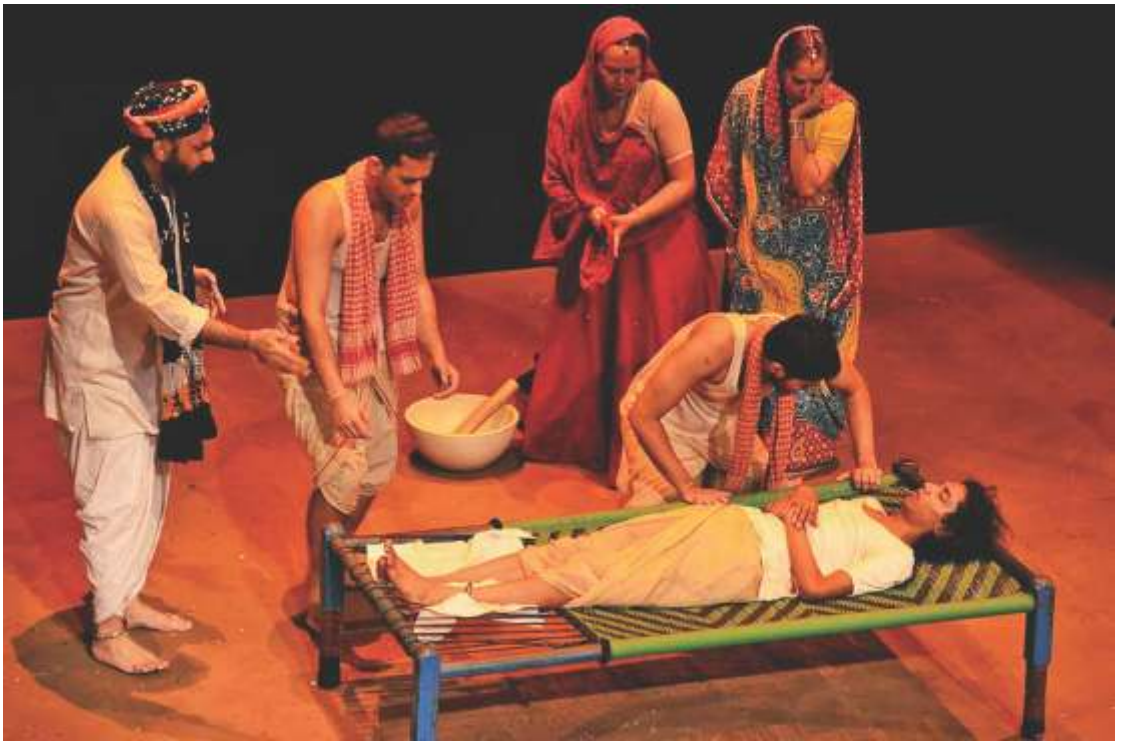

सुदीप्ता व्यास के रूप में शब्दम को एक ऐसी निष्ठावान मित्र मिली है जो न केवल अपनी साहित्यिकअभिरुचि तथा पत्रकार-लेखन से, बल्कि अपने सक्रिय योगदान से शब्दम को न्यूज़ीलैंड में 'प्रयास' कार्यक्रमों से ज़ोडे हुए हैं।

शब्दम् बालिका पाठशाला

परेशानी या मजबूरी के कारण स्कूल छोड़ चुकी बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान कर मुख्यधारा की शिक्षा में लाने का महती कार्य शब्दम् द्वारा गतवर्ष से आरंभ किया गया है। कई बालिकाओं को मुख्य धारा की शिक्षा में लाने की उपलब्धि के बाद इस वर्ष जब नई पाठशाला के लिए सर्वेक्षण कराया गया तो एक चौंकाने वाला गांव मिला।

21 वीं सदी में क्या ऐसा भी हो सकता है कि एक संपन्न कहे जाने वाले प्रांत में कुछ लोग घोर अभावों में अपना जीवन जी रहे हैं। शिकोहाबाद रेलवे जंक्शन से मात्र दो किमी दूर नगला भीमसेन एक ऐसा गांव है जो जीवन की मूलभूत सुविधाओं से कोसों दूर है। इस गांव में सड़क, बिजली और पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं एक सिरे से गायब हैं, वहां शिक्षा और उसके स्तर की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती।

शब्दम् ने इस गांव में शिक्षा का एक छोटा पौधा शब्दम् बालिका पाठशाला के रूप में स्थापित किया। इसमें ऐसी 21 महिला और लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रवेश दिया गया, जिन्होंने कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा या कुछ समय स्कूल जाने के बाद वे जारी नहीं रख सकीं। समय बीतने के साथ ये सभी शिक्षा की मुख्यधारा के निकट आती जा रही हैं।

शब्दम् द्वारा संचालित ग्रामीण बालिका पाठशाला (नगला भीमसेन) में शिक्षा ग्रहण करते हुए महिलाएं एवं बालिकाएं।

शब्दम् का यह छोटा सा प्रयास, घोर तिमिर में एक दीप जलाने जैसा है। हमारा निवेदन है कि गांवों से अशिक्षा के अंधकार को हटाने के लिए सरकारी और गैरसरकारी निगमों और संगठनों को आगे आना चाहिए। सभी को मिल कर इस स्थिति के विरूद्ध कमर कस कर कार्य करना होगा, तभी सच्चे मायने में हम शिक्षा का अलख जगा कर गांव की बहू–बेटियों को सशक्त कर सकते हैं। शब्दम् ऐसे सभी प्रयासों में सहयोग के लिए तत्पर रहेगा।

पाठशाला में बालिकाओं एवं महिलाओं को शिक्षण प्रदान करते हुए शिक्षिका।

नगला भीमसेन में शब्दम् बालिका पाठशाला शुरू

शब्दम के प्रयासों से खुली बालिका पाठशाला

पाठशाला खुलने से गांव में आएगी खुशहाली

अभी तक जनप्रतिनिधियों ने नहीं दिया था ध्यान

निरक्षर नहीं रहेंगी भीमसेन की बेटियां

पहली बार ग्रामीणों ने अपने गांव में देखी पाठशाला

शब्दम बालिका पाठशाला न. भीमसेन, शिकोहाबाद

शब्दम् बालिका पाठशाला का श्रीगणेश, ग्रामीण खुश

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

''गांव की बालिकाओं और महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता आए, वे अपनी छोटी–छोटी ज़रूरतों के लिए किसी के आगे हाथ न फैलाएं। वे स्वयं की मदद करें, अपने परिवार की मदद करें और जरूरत पड़े तो अपने पड़ोसियों की मदद भी कर सकें।''

इस तरह की भावना के साथ शुरू किए गए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, महिलाओं में रोजगारपरक कौशल विकसित करने में कारगर सिद्ध हो रहे हैं। पिछले करीब आठ वर्ष में इन सिलाई केंद्रों के माध्यम से आठ सौ बालिकाओं को रोजगारपरक ढंग से निपुण बनाया जा चुका है। इनमें कई महिलाएं अपने इस हुनर के बदले घर के खर्च में बचत करने में सक्षम हो गई हैं और कुछ महिलाएं किसी प्रशिक्षण केन्द्र में अथवा घर पर ही सिलाई कर के आजीविका अर्जित कर रही हैं। शब्दम् सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र एवं उसकी ग्रामीण शाखा में वर्तमान सत्र में करीब 40 बालिकाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

मुख्य केंद्र हिन्द परिसर में संचालित किया जा रहा है। ग्रामीण केन्द्र सीमित अवधि के लिए संचालित किया जाता है, जो कि वर्तमान में गांव गैलरई में चलाया जा रहा है। केंद्र में निपुण प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। स्वच्छता, सुरक्षा एवं संसाधनों की उचित उपलब्धता का भी पूर्ण ध्यान रखा जाता है। बालिकाओं से न्यूनतम शुल्क भी लिया जाता है।

हिन्द परिसर स्थित सिलाई केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए बालिकाएं।

प्रश्नमंच

शब्दम् द्वारा विद्यार्थियों के बीच हिन्दी संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए संचालित स्थाई कार्यक्रम 'प्रश्नमंच' अब विविध रूपों में आयोजित किया जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस, हिन्दी दिवस, शिक्षक दिवस, रक्षाबंधन, गांधी जयंती और रामनवमी आदि महान पर्व के संदर्भों को जोड़ कर प्रश्नमंच को सार्थक बनाया गया है।

प्रश्न के रूप में अपनी जिज्ञासा को रखने की परंपरा पुराणकाल से चली आ रही है। प्रश्नोत्तरी द्वारा ज्ञान में आसानी से वृद्धि होती है। इस आधार पर विद्यार्थियों के बीच इस तरीके को पूरे जोरशोर से प्रयोग किया जा रहा है। बस ध्यान इस बात का रखना होता है कि अवस्था अथवा योग्यता के अनुसार ही प्रश्न पूछे जाएं। छात्र–छात्राओं की प्रतिक्रियाएं बताती हैं कि नई पीढ़ी के बीच प्रश्नमंच का आयोजन प्रासंगिक है और उपयोगी भी।

इस वर्ष नगर के प्रह्लादराय टीकमानी सरस्वती इंटर कॉलेज एवं प्रह्लादराय टीकमानी बालिका कॉलेज, बी.डी.एम. गर्ल्स म्यु. इंटर कॉलेज, गार्डेनिया इंटर कॉलेज, नारायण महाविद्यालय, विवेकानंद विद्यापीठ एवं डंडियामई इंटर कॉलेज के अलावा सिरसागंज के गिरधारी इंटर कॉलेज, ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी, इंदिरा मैमोरियल सीनियर सैकेंडरी पब्लिक स्कूल में सफल आयोजन हुए।

जूनियर, इंटरमीडियेट और ग्रेजुएट वर्ग तक के लगभग 2450 छात्र –छात्राओं ने उत्साह के साथ अपने–अपने विद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया। उन्होंने हिन्दी साहित्य, चरित्र निर्माण, सामान्य हिन्दी, व्याकरण आदि से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों के जवाब दिए और इनाम जीते।

प्रह्लादराय टीकमानी इंटर कॉलेज में शब्दम् प्रश्नमंच में जवाब देने को आतुर छात्र।

चरित्र निर्माण श्रृंखला : 'बहन-बेटी बचाओ अभियान'

स्वयं को पहचानो और बन जाओ देवी दुर्गा। चरित्र निर्माण की श्रृंखला में रक्षाबंधन से भाई दूज (दीपावली) तक बहन–बेटी बचाओ श्रृंखला चलाई गई। रक्षाबंधन के अवसर पर स्कूल–कॉलेजों में परिचर्चा, समूह चर्चा एवं सुबह की प्रार्थना के समय वैचारिक उद्‌बोधन के माध्यम से बहन–बेटी को समृद्ध बनाने के लिए जागरूकता लाई गई। उन महत्वपूर्ण बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया जिन पर चल कर इस दिशा में सुधार किया जा सकता है।

इसके उपरांत नवदुर्गा पर्व पर 8 अक्टूबर को समूह चर्चा का आयोजन किया गया, जिस में युवाओं को खासतौर से शामिल किया गया, जबकि मुख्य रूप से शिक्षक और बुद्धिजीवी लोग उसका हिस्सा बने। सभी ने एक स्वर में कहा कि नारी, शक्ति का स्वरूप है और उसे स्वयं को पहचानना होगा, दुर्गा बनना होगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ जनपद के वरिष्ठ अधिवक्ता अनूपचंद्र जैन ने किया। उन्होंने कहा कि नारी–सशक्तिकरण तभी संभव है जब पुरुष, नारी के प्रति अपनी दृष्टि को बदलेगा। श्रीमती किरण बजाज के संदेश में आर्थिक, शैक्षिक, पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से नारी को सुरक्षित और मजबूत बनाने की पुरजोर अपील की गई। उनके संदेश में प्रस्तुत प्रश्नों ने सभी को

संवाद में गर्मजोशी के साथ अपने विचार रखता हुए एफएस कॉलेज का एक छात्र

सोचने पर विवश किया। जो प्रश्न उठाए गए वह इस प्रकार थे–

१. बहन सशक्त कैसे हो ?

–आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक, शारीरिक एवं वैचारिक रूप से सशक्त एवं स्वतंत्र बनाने हेतु क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?

२. बहन सुरक्षित कैसे हो ?

–सार्वजनिक स्थानों, शैक्षणिक संस्थाओं, सरकारी एवं गैरसरकारी कार्यस्थलों आदि में उसके मान और मर्यादा की कैसे रक्षा हो ?

३. बहन कुरीतियों से कैसे बचें ?

–कन्या भ्रूणहत्या, कुपोषण, कन्या के लालन–पालन में भेदभाव, 18 वर्ष से कम आयु में विवाह, पर्दाप्रथा, दहेज के लिए प्रताड़ना, आदि बुराइयों/कमजोरियों को हटाने के लिए क्या–क्या मजबूत कदम उठाए जाएं ?

४. बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो ?

पारिवारिक–जन्मसिद्ध एवं कानूनी, संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करने में भाई के सहयोग की भूमिका क्या हो ?

५. राष्ट्रनिर्माण में बहन की भूमिका कैसे दृढ़ हो ?

राष्ट्रीय, राजनीतिक, निजी क्षेत्र एवं शासकीय सेवाओं में रुचि एवं प्रतिभा के अनुकूल समान अवसर की उपलब्धता कैसे सुनिश्चित हो ?

इन प्रश्नों का समाधान करने के लिए उपस्थित बुद्धिजीवी, अधिवक्ता एवं छात्र–छात्राओं ने गहन विचार मंथन किया। इसके बाद कुछ बिन्दुओं को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया।

संवाद में समूह छायांकन के समय उपस्थित आयोजन के प्रमुख लोग।

–कानून ने महिलाओं को अधिकार दे दिए हैं लेकिन उसे वास्तव में उसे अधिकार नहीं मिलते हैं।

–हर पिता अपनी लड़की को स्वाबलंबी बनाने में सक्षम नहीं है या उसकी प्राथमिकता में पुत्र ऊपर है।

–यह भावना भी नहीं है कि पुत्री को स्वाबलंबी बना कर ही उसका विवाह किया जाए।

–पुत्र के समान ही पुत्री को माता–पिता की संपत्ति में सारे अधिकार प्रदान किए जाएं, यह भी हम में से अधिकांश को गवारा नहीं होता है।

–पिता के कारोबार में अवसर एवं विवाहोपरांत पति के साथ पिता के घर में ही रहने की स्वतंत्रता बालिकाओं को मिलनी चाहिए।

–ससुराल में कोई कष्ट होने पर उसे वापस मायके में अकेले या पति के साथ सम्मान पूर्वक रहने के लिए स्थान मिलना चाहिए।

–पति या ससुराल से परेशान होने पर युवती द्वारा उनके बहिष्कार पर सभी का समर्थन और सहयोग मिलना चाहिए।

–चरित्र को बनाये रखने के लिए नारी और

पुरूष की बराबर जिम्मेदारी होनी चाहिए।

–माता पिता द्वारा जन्म से लेकर मृत्यु तक बालिका को सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत होना चाहिए।

–नारियों के संबंध में बनाई गई धारणाओं एवं वर्जनाओं को, जिनमें कोई तथ्य नहीं है, त्याग देना चाहिए।

–हर लड़के के पिता को यह तय करना होगा कि वह दहेज नहीं मांगेगा।

–हर माता–पिता को यह तय करना होगा कि विवाह की रस्म के आडंबरों और चमक–दमक और फालतू दिखावों को त्यागना होगा।

–विवाह तो एक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान है। इसकी शुचिता पर ही दांपत्य जीवन के रस–सौंदर्य का पौधा उगता है, न कि कुरीतियां, आडंबर, अंधविश्वास, लालच और दिखावे की होड़ से।

अधिवक्ता प्रवीन चतुर्वेदी, डॉ. लतिका सिंह, संजय शर्मा, डॉ. रजनी यादव, टी. एन. सिंह उत्तम सिंह उत्तम, विनय कुमार, नवीन मिश्रा, प्रणव शरण, अतुल शर्मा ने भी चर्चा में भाग लिया। सभी ने नारी सशक्तीकरण की दिशा में प्रयास करने का संकल्प लिया और कहा कि सर्वप्रथम इसे अपने ही घर से आरंभ करेंगे।

विविधा

दीपावली

लोग अपनी संस्कृति को पहचानें और उसका सम्मान करें। परंपराओं को मात्र अंधानुकरण की भांति न अपनाएं। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए शब्दम् ने बुराई पर अच्छाई की जीत के महान पर्व दीपावली को सादगी से बालिका पाठशाला और सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की छात्राओं के साथ मनाया।

सर्वप्रथम छात्राओं को दीपावली की शुभकामनाएं दी गईं। इसके उपरांत उन्हें दीपावली का महत्व बताया गया। दीपावली का पर्व भगवान राम के महान चरित्र से प्रेरणा ग्रहण करने के लिए मनाया जाता है।

दीपावली के महत्व के संबंध में लिखवाये गये बिन्दुओं को भी पूछा गया एवं पटाखों से होने वाली हानियों के बारे में बताया।

मासिक परीक्षा में प्रथम स्थान एवं द्वितीय स्थान पर आने वाली छह बालिकाओं/महिलाओं को तथा अन्य सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में बालिकाओं ने रंगोली सजाई और बंदनवार बनाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। दोनों ही स्थानों पर दीपावली मिष्ठान्न वितरित किया गया।

छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली।

विविधा

सम्मतियां

स्थापना दिवस

'शब्दम्' के कार्यक्रम में भाग लेकर और उससे सम्मानित होकर अच्छा लगा। जिस बात से सबसे अधिक प्रभावित हुआ, वह यह है कि इस संस्था का कार्यक्षेत्र ग्रामीण अंचल है। यह एक ऐसा काम है जो कोई अन्य संस्था नहीं कर रही है।

'शब्दम्' के लिए मेरी ढेरों शुभकामनाएं और सुश्री किरण बजाज को अशेष प्यार और सम्मान। शब्दम का विस्तार पूरे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में, देशभर में होना चाहिए, यही मेरी कामना है।

-**प्रो. केदारनाथ सिंह** (वरिष्ठ कवि)

'शब्दम्' संस्था समाज में संस्कार बोने का अद्वितीय कार्य कर रही है, उसके लिए इस संस्था की रूहेरवां किरण बजाज साहिबा और 'शब्दम्' से जुड़े सभी महानुभाव कार्यकर्ता बधाई के पात्र के हैं। धन्यवाद और साधुवाद के भी पात्र। बोये हुए बीजों की फसल वांछित फल देगी आज नहीं कल। बोया हुआ बीज कभी व्यर्थ नहीं जाता। समाज को जिस सकारात्मकता की आवश्यकता है, उस ओर यह प्रयास भले छोटा है पर सराहनीय है।

-**उदय प्रताप सिंह** (कार्यकारी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

नि:शब्द से ही फूटता है 'शब्दम्' का संसार

'शब्दम' के माध्यम से किरण बजाज जितने भी कार्य में संलग्न हैं वह दूर तक सामाजिक उन्नति से जुड़े कार्य हैं। साहित्य, संगीत से जुड़े हुए क्रिया कलाप तो वस्तुतः सांस्कृतिक स्तर पर लोकजागरण जैसे प्रयास हैं। 17 नवंबर 2013 को कवि केदारनाथ सम्मान के आयोजन को देखकर मुझे श्रीमती किरण बजाज के प्रति गहरी श्रद्धा का बोध जाग्रत हुआ। यह सचमुच इस ग्रामीण अंचल में एक गहरी आस्था के साथ जो समाज के लिए कर रही हैं, वह सांस्कृतिक अलख जगाने जैसा महती कार्य है। यह शब्द से भी आगे शब्दातीत की. यात्रा है।

-**प्रो. गोबिन्द प्रसाद** (ज.ने.वि. नई दिल्ली)

शिक्षक दिवस

आदरणीया बहन किरण बजाज,

आपका 7 सितंबर 2013 का धन्यवादपत्र तथा शिक्षक दिवस पर मेरे सम्मान का छायाचित्र मिला, हृदय से कृतज्ञ हूं। आप प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण की शुद्धि के लिए जो रचनात्मक प्रयास कर रही हैं वह स्तुत्य है।

-**डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा**
(निव. एसो. प्रोफेसर, फिरोजाबाद)

प्रश्नमंच

'शब्दम' संस्था द्वारा आयोजित 14 सितंबर 2013 की प्रश्नमंच प्रतियोगिता ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक एवं संप्रेषण कुशलता का पर्याय बनी। निश्चित ही इससे छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं अतिथिजनों को बहुत सी अछूती जानकारी हासिल हुई। साथ ही अभिरूचि संवर्द्धन हुआ। शब्दम् एवं उनके उन्नायकों की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना सहित सधन्यवाद,

-**डॉ.अनुपमा चतुर्वेदी,** नारायण महाविद्यालय शिकोहाबाद।

'शब्दम्' द्वारा 30.8.13 को आयोजित हिन्दी प्रश्नमंच कार्यक्रम अति ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक रहा। कार्यक्रम का लक्ष्य उत्कृष्ट है। इससे छात्रों के व्यावहारिक जीवन में हिन्दी की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को न करने की प्रेरणा मिली। कार्यक्रम ने हिन्दी साहित्य के शिक्षण हेतु शिक्षकों को एक नई प्रेरणा दी। आशा है ऐसे कार्यक्रम शब्दम् द्वारा भविष्य में आयोजित होते रहेंगे। तथा हिन्दी भाषा के विकास की सरिता सतत् प्रवाहित होती रहेगी।

-**प्रधानाचार्य, प्रह्लादराय टीकमानी** इंटर कॉलेज शिकोहाबाद।

कुछ साहित्य समाज को बदलने के काम आ सकता है लेकिन श्रेष्ठ साहित्य समाज को बदलता नहीं, उसे मुक्त करता है, फिर भी उस मुक्ति में समाज के लिए, और हां संस्कृति के लिए मानव मात्र के लिए बदलाव के रास्ते खुल जाते हैं।

-अज्ञेय

विश्व
तम्बाकू निषेध
दिन
—३१ मई, २०१३—

उद्देश्य के लिए कला –
शिकोहाबाद के बच्चों की ओर से धूम्रपान विरोधी ८०० से ज्यादा प्रविष्टियों से चुने गए चित्र

आभार

राधाकृष्ण धानुका चैरिटी ट्रस्ट, कोलकाता
जमनालाल बजाज फाउंडेशन, वर्धा
द ब्रज फाउंडेशन, वृन्दावन

आप सभी के सहयोग से ही शब्दम् के सार्थक प्रयासों को धरातल मिल सका।

“

भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षाएं रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिए, वह सब उसे भारत में मिल सकता है।

–महात्मा गांधी

”

शब्दम् हिन्द लैम्प्स परिसर
शिकोहाबाद जिला फिरोजाबाद
उत्तर प्रदेश– 283141
फोन न. 05676–234018, 2340501–503
फैक्स. 05676–234300
ई–मेल : shabdam.ceo@gmail.com, pmhoskb@gmail.com
वेबसाइट– www.shabdamhindi.com
ब्लॉग– www.shabdamsamachar.blogspot.in